हरीतिमा-जीवन और जगत संरक्षक

-पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरीतिमा—जीवन और जगत संरक्षक

लेखक

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा—२८१००३

फोन : (०५६५) २५३०११५, २५३०१२८, २५३०३९९

मो० : ०९९२७०८६२८९, ०९९२७०८६२८७

फैक्स : २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१९

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि

मथुरा (उ० प्र०)

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरीतिमा—जीवन और जगत संरक्षक

पृथ्वी का जीवन प्राणियों और वनस्पतियों में विभक्त है। दोनों एकदूसरे के पूरक और पोषक हैं। पृथ्वी पर घास-पात के रूप में छोटी वनस्पतियाँ और बड़े पौधों के रूप में झाड़ और वृक्ष बढ़ते हैं। प्राणियों को इन्हीं के सहारे जीवन धारण करने का अवसर मिलता है। पशु-पक्षी, मनुष्य सभी घास-पात पर जीवित हैं। अन्न भी एक प्रकार की घास का बीज है। शाक-भाजी, फल-पत्ते ये भी वनस्पति हैं। मनुष्य इन्हीं को खाकर जीवित रहते हैं। वनस्पतियों के अभाव में पशु-पक्षी, मनुष्य कोई भी जीवित नहीं रह सकता। समुद्र और तालाबों में भी कई प्रकार की हलके किस्म की घास पाई जाती है। प्राय: उसी पर जल-जंतुओं का निर्वाह होता है। हिंस्र प्राणी मांस खाते पाए जाते हैं, पर मांस में शक्ति भी वनस्पति से ही आती है। दूध की भी पृथक सत्ता नहीं। पशु घास खाते हैं और वह घास ही दूध बन जाती है। ऐसे प्राणी इस संसार में अति स्वल्प मात्रा में ही होंगे जो प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से वनस्पतियों का अपने निर्वाह में कोई उपयोग न करते हों। पशु-पक्षियों से लेकर कीड़े-मकोड़ों तक इस या उस प्रकार वनस्पति के सहारे ही प्राण धारण किए हुए हैं। आस-पास में बरसने वाली सूर्य की किरणें और जमीन से उगने वाली वनस्पति ही जीवन के दो प्रधान आधार हैं। इस संसार में जितना वैभव, सौंदर्य, जीवन, आनंद दृष्टिगोचर होता है; उसे इन्हीं दो ईश्वरीय विभूतियों का अनुग्रह कहना चाहिए।

खाद्य रूप में वनस्पतियों का उपयोग प्रत्यक्ष है। इसके अतिरिक्त उनका अप्रत्यक्ष लाभ और भी बड़ा है। पौधे ऑक्सीजन वायु उगलते और कार्बन डाइऑक्साइड खाते हैं। मनुष्य व पशु कॉर्बन डाइऑक्साइड उगलते हैं और ऑक्सीजन खाते हैं। इस प्रकार मनुष्य पौधे की साँस पीकर और पौधे मनुष्यों की साँस पीकर जीवित रहते हैं। यह आदान-प्रदान इतना महत्त्वपूर्ण है, जिसे खाद्य उपलब्धि से भी बढ़कर महत्त्व दिया जाना चाहिए। संसार में वृक्ष न रहें तो मनुष्यों की साँस द्वारा छोड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुई तथा अन्य प्रकार से उत्पन्न हुई विषैली हवा से यह सारा वातावरण भर जाएगा और फिर अपनी धरती पर एक भी प्राणी का जीवन संभव न रहेगा।

वस्तुओं के मूल्यांकन में प्रायः हमसे भूल ही होती रहती है। धन-दौलत को महत्त्व दिया जाता है, पर उसकी ओर ध्यान भी नहीं जाता, जिस पर हमारा जीवन निर्भर है। वनस्पति वर्ग को अपना जीवन-साथी मानकर चलना चाहिए और उसे सुविकसित स्थिति में रखना अपने ही हितसाधन का एक अति महत्त्वपूर्ण अंग मानना चाहिए। वनस्पति को तुच्छ न माना जाए, उसका महत्त्व समझा जाए और उसके अधिक उत्पादन, संवर्द्धन पर ध्यान दिया जाए।

जनसंख्या वृद्धि के कारण कल-कारखाने, निवास, सड़क आदि बनाने में बहुत-सी भूमि वनस्पति उत्पादन से रहित हो गई। घास उत्पन्न करने वाली भूमि अब दिन-दिन कम होती जा रही है। फलतः पशु-पक्षियों के निर्वाह साधन घट रहे हैं और वे कम होते चले जाते हैं।

स्मरण रखा जाए कि पक्षी उन कीड़ों को खाते हैं, जो फसल को नष्ट करते हैं। वे बीज खाते हैं और अपनी बीट द्वारा उन बीजों को दूर-दूर तक पहुँचाकर इस धरती पर जहाँ-तहाँ वृक्ष-झाड़ जड़ी-बूटियों के बोने, उपजाने की भूमिका निभाते हैं। पशुओं के मल-मूत्र एवं अस्थि-मांस से पृथ्वी को खाद मिलती और उपज बढ़ती है। अस्तु, वनस्पति और पशु-पक्षियों का संतुलन यथावत् बना रहना चाहिए अन्यथा जीवन संकट की विभीषिका सामने आ खड़ी होगी।

इन दिनों बिना उपजाऊ जमीन को उपजाऊ बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं और ऊबड़-खाबड़ भूमि को समतल किया जा रहा है, फिर भी वह उपलब्धि इतनी नहीं है कि निवास व्यवस्था के उपयोग के लिए छिनी जमीन की क्षतिपूर्ति हो सके। इन दिनों जंगल कट रहे हैं। कृषि के लिए जमीन चाहिए, इसीलिए जंगलों को साफ किया जा रहा है। इससे वृक्षों की संख्या घट रही है, जलाने, भवन निर्माण एवं व्यावसायिक प्रयोजनों के लिए लकड़ी की माँग बढ़ रही है। फलतः वृक्ष तेजी से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कटते तो हैं, पर उनकी स्थान पूर्ति नहीं होती। यह दोहरा संकट है। वृक्षों की कमी पड़ते जाने से उनके द्वारा लकड़ी की आवश्यकता पूरी होने में कठिनाई उत्पन्न होती है और उसकी महँगाई बढ़ती है। पत्तियों के सड़ने से भूमि को खाद मिलता है। उनकी कमी से भूमि की उर्वरा शक्ति घटेगी। फलत: अन्न और घास-पात का उत्पादन कम पड़ने से मनुष्यों और पशुओं के लिए संकट खड़ा होता चला जाएगा।

शुद्ध वायु की कमी पड़ते जाना इससे भी बड़ा संकट है। इस प्रकार वृक्षों को काटना अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के बराबर है। यदि उन्हें काटना ही पड़े तो आवश्यक है कि उतने ही नए लगा दिए जाएँ। सच तो यह है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ वायुशुद्धि की आवश्यकता भी बढ़ेगी और उसकी पूर्ति मनुष्यों के अनुपात से ही वृक्षों की संख्या बढ़ाने से संभव हो सकती है। किंतु हो उलटा रहा है वृक्ष कटते और घटते जा रहे हैं। फलत: लकड़ी की आवश्यकता एवं भूमि के लिए प्राकृतिक खाद मिलने में भारी अड़चन उत्पन्न हो रही है। शुद्ध वायु का बढ़ता संकट तो इससे भी अधिक बढ़-चढ़कर है।

वृक्ष घटने से संकट के और भी कई दुष्परिणाम हैं, जिनके कारण अगले दिनों भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। वृक्षों की जड़ें जमीन में फैलती हैं और भूमि की परतों को रस्सों से कसने की तरह जकड़े रहती हैं। इससे भूमि रेत बनकर हवा में उड़ने से रुकती है और वर्षा के बहाव में कटने से भी बचती है। यदि पेड़ न रहें तो जड़ों द्वारा भूमि की परतें जकड़े रहने की सुरक्षा समाप्त हो जाएगी और हर वर्षा में उपजाऊ मिट्टी बह-बहकर नदी-नालों के सहारे समुद्र की ओर लुढ़कती जाएगी। इसी प्रकार हवा के तेज झोंके भूमि को झकझोरेंगे और कड़ी जमीन को रेत के रूप में परिणत करने तथा आँधी के साथ इधर-उधर उड़ा ले जाकर हानि पहुँचाते रहेंगे।

जिन क्षेत्रों में पहले पेड़ थे, तब वहाँ की भूमि बहुत अच्छी और उपजाऊ थी, पर जब वहाँ के पेड़ कट गए तो धीरे-धीरे वहाँ की उर्वरता घट गई और रेतीले रेगिस्तान दिखाई देने लगे। खाद मिलते रहने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण भूमि की ऊपरी परतें ही उपजाऊ होती हैं। वे पानी में बहने और हवा में उड़ने लगेंगी तो निश्चित रूप से रेतीली एवं अनुत्पादक भूमि ही बढ़ेगी। उर्वरता के अभाव में मनुष्यों और पशुओं को भारी संकट का सामना करना पड़ेगा।

वृक्षों का वर्षा से भी घनिष्ठ संबंध है। उनमें एक विशेष आकर्षण शक्ति होती है, जिससे बादल खिंचकर आते और पानी बरसाते हैं। जहाँ वृक्ष कटे हैं, वहाँ उसी अनुपात से वर्षा भी घटेगी। ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जहाँ उन हरे-भरे प्रदेशों में काफी वर्षा होती थी। परंतु जब उधर वृक्ष कट गए और नंगी भूमि रह गई तो वर्षा की भारी कमी पड़ गई है और वे क्षेत्र सूखाग्रस्त होने के कारण विपत्ति में फँस गए। वृक्ष काटकर जो लाभ उठाया जाता उसकी तुलना में वनस्पति और वर्षा की कमी से होने वाली हानि अनेक गुनी कष्टदायक बनकर सामने आई।

एक ओर भूमि का अन्य उपयोग करने के लिए तथा लकड़ी की आवश्यकता पूरी करने के लिए वृक्षों का काटना आवश्यक है। दूसरी ओर उस कमी से शुद्ध वायु का संकट, पत्तियों से खाद मिलने की कमी, पक्षियों का आश्रय, स्थल घटने से उनका विनाश, फलतः फसल शत्रु कीड़ों की वृद्धि जैसी कितनी ही कठिनाइयाँ सामने आती हैं। जड़ों द्वारा न पकड़े रहने से भूमि कटती और हवा में उड़ती है। वर्षा की कमी पड़ने से वे क्षेत्र सूखाग्रस्त होकर दुर्भिक्ष की स्थिति में पहुँचते हैं। साँप-छछूंदर जैसी स्थिति है। पेड़ काटे बिना काम भी नहीं चलता और काटने पर उसकी हानि इतनी होती है, जिसकी तुलना में लाभ की उपयोगिता निरर्थक बनकर रह जाती है।

इस संकट का सामना करने का उपाय एक ही है कि नए वृक्ष लगाने का उत्साह उत्पन्न किया जाए और उसमें हर मनुष्य को पूरी-पूरी दिलचस्पी बनी रहे। यदि उत्साह हो तो उसे कार्यान्वित करना कुछ भी कठिन काम नहीं है। कृषि में प्रयुक्त होने वाली भूमि के अतिरिक्त भी जहाँ-तहाँ ऐसी जमीन पर्याप्त मात्रा में रहती है, जिसमें वृक्ष उगाए जा सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सरकार वनभूमि को सुरक्षित रखने का प्रयत्न करती है और सड़कों के किनारे वृक्ष लगाने जैसे प्रयास करती है। पर इतना बड़ा कार्य सरकार पर छोड़ देने से निश्चिंत नहीं रहा जा सकता है। इसके लिए जनसाधारण में व्यक्तिगत रूप से अभिरुचि उत्पन्न करनी चाहिए और हरीतिमा अभिवर्द्धन में अपना उत्साह भरा प्रयास प्रस्तुत करना चाहिए। वृक्षारोपण हमारी महत्त्वाकांक्षाओं में सम्मिलित रहना चाहिए। जिस प्रकार अपना व्यवसाय, धन, सम्मान, प्रभाव, यश आदि बढ़ाने में उत्साह रहता है, वैसी ही श्रेयस्कर सफलताओं में एक हरीतिमा अभिवर्द्धन एवं वृक्षारोपण को भी सम्मिलित रखना चाहिए।

शोभा, सौंदर्य, कला और सुसज्जा की दृष्टि से घर-आँगन में फूल और बेलें लगाने का उत्साह उत्पन्न करना चाहिए। यह प्रयास वस्तुतः बहुत ही सुरुचिपूर्ण है। घर आँगन में, बरामदे के आस-पास आमतौर से थोड़ी-बहुत कच्ची जमीन रहती है, उसमें फूल लगाए जा सकते हैं। खंभों के सहारे छतों-छप्परों पर बेलें चढ़ाई जा सकती हैं और अपना घर प्राकृतिक शोभा-सुषमा से सुसज्जित बनाया जा सकता है।

बड़े शहर-कसबों में जगह की कमी पड़ती है, वहाँ छत-आँगन सभी भरे होते हैं। इस स्थिति में गमलों का इस्तेमाल किया जा सकता है। मिट्टी, सीमेंट के गमले बाजार में बिकते हैं। पुराने डिब्बे, कनस्तर काट-छाँटकर उन्हें ऊपर से रंग-पोत दिया जाए तो अच्छे-खासे गमले बन सकते हैं। पैकिंग में आने वाली लकड़ी की पेटियाँ भी काम दे सकती हैं, यहाँ तक कि नाँद या टूटे घड़े के पेंदे भी इस प्रयोजन को पूरा कर सकते हैं। उनमें मिट्टी भर ली जाए, थोड़ा खाद डाला जाए, फूलों के पौधे और बेलें उन्हीं में आसानी से बोए जा सकते हैं। उनकी सिंचाई, रखवाली पर ध्यान रखा जा सके तो अपना घर हरियाली से सुशोभित और रंग-बिरंगे फूलों से सुसज्जित दिखाई पड़ सकता है। इसमें न तो कोई बड़ा खरच करना है और न भारी परिश्रम। सच तो यह है कि यह एक ऐसा मनोरंजन है, जिसमें अपनी सृजनात्मक शक्ति, कुशल बुद्धि एवं कलात्मक दृष्टि का विकास होता है। श्रम करने का नया आधार मिलने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से आलस्य-प्रमाद के रूप में छाई रहने वाली दरिद्रता से भी छुटकारा मिलता है। जागरूकता, स्फूर्ति एवं कुछ करने की उमंग न केवल अपने में वरन पूरे परिवार में उत्पन्न की जा सकती है। बच्चों को ऐसे कार्यों में स्वभावत: उत्साह रहता है। यदि उन्हें इस दिशा में प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन दिया जा सके, तो सहज ही वे अपने लिए एक सृजनात्मक कार्य प्राप्त कर लेंगे और तोड़-फोड़ की अव्यवस्था फैलाने से बचेंगे।

फूल-बेलों की तरह ही घरों में शाक-वाटिका लगाई जा सकती है। जिनके पास कच्ची खाली जगह है, वे उसमें ऋतु के अनुरूप शाक-भाजी बो लिया करें। जिनके घरों में पक्की जगह है वे गमले, टोकरियाँ, पेटियाँ इस्तेमाल कर सकते हैं। हाथ की उगाई वस्तुओं के प्रयोग में एक भावनात्मक आनंद होता है। छतों का पूरा इस्तेमाल किया जा सके तो पक्के घरों में भी इतनी सब्जी उगाई जा सकती है, जिससे किसी छोटी गृहस्थी का काम भली प्रकार चल सके। यह बचत भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। सबसे बड़ा लाभ परिवार के लोगों में सृजनात्मक क्षमता का विकास होना है। जिसका मूल्य शाक-भाजी उगाने के सहारे मिलने वाले आर्थिक लाभ से भी कहीं अधिक है।

अदरक, हरीमिर्च, टमाटर, पोदीना, धनिया, पालक जैसी चटनी के काम आने वाली वस्तुएँ तो हर महीने, हर मौसम में दो-चार गमलों में ही उगी रह सकती हैं और उनके सहारे अपने उत्पादन का गर्व तथा आनंद सदा ही मिलता रह सकता है। इतना तो हर व्यक्ति कर सकता है। जिनके पास भूमि नहीं है, जो नौकरी-व्यवसाय आदि में व्यस्त रहते हैं उनके लिए भी वनस्पति उत्पादन में इतना योगदान तो बड़ी आसानी से संभव हो सकता है।

जिनके पास भूमि है, वे उसका अन्यमनस्क होकर उपयोग न करें, वरन यह दृष्टि रखें कि इसमें अधिकाधिक हरीतिमा का उत्पादन करना है। अन्न-शाक, तिलहन, कपास आदि की फसलें किस प्रकार अधिक मात्रा में उपजा सकते हैं, इसी के लिए उनका चिंतन और प्रयास उत्साहपूर्ण स्थिति में रहना चाहिए। इस क्षेत्र में भूमिधरों में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा चलनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहिए कि किसका पुरुषार्थ अग्रणी रहा। अधिक शस्य संपदा का अनुदान कितना, किस स्तर का, किसने रखा, इसे प्रतिष्ठा और प्रतिस्पर्द्धा का विषय बनाना चाहिए और इस घुड़दौड़ में बाजी मारने की महत्त्वाकांक्षा हर किसी में जागनी चाहिए।

समुचित जुताई, सिंचाई, खाद, बीज और रखवाली का जागरूक पुरुषार्थ, उत्साह और तत्परता के साथ इस क्षेत्र में जुट पड़ें तो हमारी फसलों का परिमाण और स्तर आज की अपेक्षा कल ही दूना हो सकता है। उस श्रम-यज्ञ का परिणाम यह होगा कि पशुओं और मनुष्यों को अधिक खाद्य प्राप्त करने और परिपुष्ट होने का अवसर मिलेगा। यह पुण्य-परमार्थ अपने लिए भी तत्काल सत्परिणाम उपस्थित करेगा। अधिक मेहनत से अधिक कमाई होगी और पुरुषार्थी को आत्मसंतोष अनुभव करने, सराहना पाने, संपन्न बनने का अवसर मिलेगा।

जो स्वयं कृषि नहीं कर सकते, उसे जिस-तिस को भाड़े, बटाई पर देते फिरते हैं उनके लिए यही उचित है कि इस प्रकार धरित्री की उत्पादन क्षमता में उपेक्षा-अवरोध उत्पन्न न करें और उसे उनके हाथ बेच दें, जो उसमें पूरा ध्यान और पूरा श्रम नियोजित कर सकने की स्थिति में हैं। इससे अधिक हरीतिमा उत्पादन करने का पथ प्रशस्त होगा। किसान को मात्र अन्न ही नहीं, शाक और फल उगाने की बात भी सोचनी चाहिए। मानवीय आवश्यकताओं में शाकों और फलों का भी अति महत्त्व है। कृषि भूमि का एक भाग फल-शाक उगाने और फलों का छोटा उद्यान लगाने के लिए भी सुरक्षित रखा जाए। जिस प्रकार गौ-पालन करके परिवार के स्वास्थ्य संरक्षण की व्यवस्था बनाई जाती है, ठीक उसी प्रकार शाक और फलों की आवश्यक मात्रा घर के लोगों को मिलती रहे, यह ध्यान रखने योग्य बात है। अन्न और दूध की ही तरह, शाक-फल भी भोजन के आवश्यक अंग हैं। यदि यह तथ्य समझ लिया जाए तो हर कृषक को इतने उत्पादन में भी अनाज, कपास, तिलहन आदि उगाने की तरह अभिरुचि उत्पन्न होगी। यह उत्पादन आर्थिक दृष्टि से भी अधिक लाभदायक है। कठिनाई केवल इतनी ही है कि ढर्रे पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहिया लुढ़काने का मानसिक आलस्य जो चल रहा है उसी को चलने देने की आदत बनाए रहते हैं और सोचने तथा करने की उमंग को फलवती नहीं होने देते। भोजन में कई तरह की वस्तुएँ रहने की तरह यदि कृषि उत्पादन में भी शाकों और फलों का उत्पादन आवश्यक मान लिया जाए तो आज की अपेक्षा कल स्थिति ही दूसरी होगी। उत्पादक धनी बनेंगे, अपने परिवार की स्वास्थ्य-वृद्धि करेंगे और उस उपयोगी उपज से अनेकों को लाभान्वित होने का अवसर मिलेगा।

जलाऊ ईंधन, इमारत तथा उपकरणों के लिए लकड़ी की जरूरत किसान की ही तरह उनको भी पड़ती है, जिनके पास जमीन नहीं है। अस्तु, जो जमीन कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है, उस पर जलाऊ लकड़ी के पेड़ लगाए जाएँ। इससे भूमि की शोभा-सौंदर्य बढ़ेगा और उसे हवा पानी के दबाव से नष्ट न होने एवं अधिक वर्षा पाने का लाभ मिलेगा और मनुष्यों एवं पशु-पक्षियों की कई तरह की आवश्यकताएँ पूरी होंगी। खेतों पर भी पशुओं, मनुष्यों को छाँह पाने के लिए आश्रय की आवश्यकता पड़ती है। उसकी पूर्ति के लिए आम, जामुन, शहतूत, कटहल जैसे अधिक छाया और अधिक फल देते रहने वाले वृक्ष लग सकते हैं। इनसे जगह तो घिरती है, पर बिना सिंचाई, जुताई के सहज ही फलों की आमदनी भी तो होती रहती है। इस प्रकार फलदार वृक्षों का लगाना और घटिया जमीन में जलाऊ या इमारती पेड़ उगाना लगभग उतना ही लाभदायक जा पहुँचता है, जितना कि कृषि की उपज होती है। यदि कुछ कम भी रहे तो भी वृक्ष की बहुमुखी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए उनके उत्पादन को ध्यान में रखा जाना और महत्त्व दिया जाना आवश्यक है।

प्राणिजगत की तरह ही वनस्पति जगत भी है। इन दोनों के बीच अन्योन्याश्रय संबंध है। एकदूसरे पर निर्भर हैं। इनमें से एक की स्थिति दुर्बल पड़ेगी, तो दूसरे को भी दुर्दशाग्रस्त होना पड़ेगा।

प्राणियों का आहार वनस्पतियाँ हैं। मांसाहारी प्राणी भी मात्र उन्हीं को खाते हैं, जो शाकाहार पर निर्भर रहते हैं। मांसाहारी मांसाहारी को खाने लगे तो उनका अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। प्राणियों का मल-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मूत्र खाद के रूप में वनस्पतियों को मिलता है। उनके द्वारा छोड़ी हुई साँस वनस्पतियों को सजीव साँस प्रदान करती है। इसी प्रकार वृक्षों द्वारा छोड़ी हुई प्राणवायु से प्राणियों का गुजारा चलता है। अन्न, शाक, फल आदि के सहारे मनुष्य और घास-पत्ते खाकर अन्य प्राणी जीवित रहते हैं।

कृषि उद्यान के व्यवसाय से अधिकांश मनुष्यों की आजीविका चलती है। भारत जैसे कितने ही कृषिप्रधान देश इस संसार में हैं। उनके प्रजाजन अन्न-वस्त्र की सुविधा जुटाने वाले अनेकानेक कार्य करते और गुजर चलाते हैं। वृक्ष-वनस्पति का वर्षा से, मौसम से नदी-नालों को नियंत्रित रखने से, भूमि क्षरण रोकने से, पशुपालन व्यवसाय से सघन संबंध है। जलाऊ लकड़ी से लेकर इमारती प्रयोजनों में, फर्नीचरों में जिनका निरंतर उपयोग होता है, उन वृक्षों को मानव जीवन का अविच्छिन्न सहचर ही माना जाना चाहिए। इनका परिपोषण संवर्द्धन अपने ही अंग-अवयवों एवं परिजनों के परिपालन जैसा ही माना जाना चाहिए। इस संबंध में हमारा ध्यान तथा रुझान सदा ही केंद्रित रहना चाहिए कि हरीतिमा हमारे इर्द-गिर्द रहे और हम उसके संपर्क-सान्निध्य में अधिकाधिक समय गुजारें। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह आवश्यक भी है और उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण भी।

वृक्षों के आरोपण संरक्षण के लिए उपयुक्त पर्याप्त भूमि चाहिए। हरीतिमा संवर्द्धन से संबंधित कृषि-कार्य के लिए खेतों की आवश्यकता है। इन दो कार्यों को साधन संपन्न ही कर सकते हैं। पर इस संदर्भ में दो कार्य ऐसे हैं, जिन्हें हर वनस्पति प्रेमी सहज ही कर सकता हैं—एक है—घरेलू शाकवाटिका दूसरा है—पुष्पवाटिका। पहला शरीर-पोषण के लिए और दूसरा मानसिक उल्लास के लिए सस्ते में, सरलतापूर्वक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पोषण प्रदान करते हैं। अपने समाज में हरे भोजन का प्रचलन कम है। तले-भुने, पिसे और छिलका उतारे हुए अन्न में कुछ सार रह नहीं जाता, वह कोयले जैसा नीरस, निरुपयोगी होता है। जीवन, जीवन प्रदान करता है; इस दृष्टि से हरे-भरे शाक-फलों का भोजन में बाहुल्य रहना चाहिए। हरी पत्ती वाले कच्चे शाक, सलाद, चटनी की तरह प्रयुक्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होते रहें तो भी स्वास्थ्यप्रद आहार की आवश्यकता पूरी हो सकती है। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि फूल तो दूर, शाक भाजी तक पर्याप्त मात्रा में लेने का प्रचलन नहीं है। कहीं कुछ है तो उसे भी इतना तला, भुना, उबाला जाता है कि वह भी कोयले के सदृश ही बनकर रह जाता है। यही कारण है कि हमारा समूचा समाज कुपोषण का शिकार है। इस मामले में धनी, निर्धन सब समान है। निर्धन को दरिद्रता के कारण और संपन्नों को चटोरेपन तथा पाक विज्ञान से सर्वथा अनजान रहने के कारण ऐसे भोजन पर निर्भर रहना पड़ता है, जो सस्ता हो या महँगा, भोजन की मौलिक विशेषताओं से रहित ही होता है।

इस कमी की पूर्ति बहुत अंशों में घरेलू शाकवाटिका कर सकती है। टोकरों में, गमलों में, क्यारियों में, टूटे कनस्तरों में मिट्टी भरकर शाक-भाजी उगाई जा सकती हैं। इस संदर्भ में बेलों वाले तथा पत्तियों वाले शाक अधिक मात्रा में उत्पन्न हो सकते और कम जगह रहते हुए भी अधिक फसल दे सकते हैं। लौकी, तोरी, सेम आदि की बेलें कम जगह में बोई जा सकती हैं और जिधर-तिधर फैलकर पर्याप्त मात्रा में बहुत दिन तक शाक की आवश्यकता पूरी करती रह सकती हैं। इसी प्रकार पालक, मेथी, बथुआ, चौलाई, पोदीना, धनिया जैसे पत्ती वाले शाक भी उबालकर या कच्चे चटनी की तरह काम आते रह सकते हैं। जमीन में बोने की दृष्टि से अदरक सबसे लाभदायक है। हमें अपने घरों पर इन्हें बोने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि जीवनदायक हरे आहार की आवश्यकता पूरी होती रहे और बिना खरच के कुपोषण की समस्या से निपटने का प्रयोग मिलता रह सके।

मानसिक आवश्यकता को पूरी करने में हरीतिमा संवर्द्धन, पुष्प वाटिका का उतना ही महत्त्व है, जितना कि शरीर के लिए आहार का। इस भारी कमी को दूर करने के लिए घरेलू शाकवाटिका उगाने की जरूरत है हमारे प्रत्येक घर में फूलों के पौधे और बेलें रहनी चाहिए। इनके माध्यम से नेत्रों को शीतलता, मन को प्रसन्नता का लाभ मिलता है। कला और सौंदर्य की आंतरिक पिपासा को समाधान मिलता है तथा उत्पादन-संरक्षण की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रवृत्ति को वैसा ही पोषण मिलता है, जैसा कि बालकों के लालन-पालन में अभिभावकों को आनंद, उत्साह एवं कौशल बढ़ाने का सुयोग बनता है।

पेट आहार से भरता है और कंठ की प्यास पानी से बुझती है। किंतु अन्य ज्ञानेंद्रियाँ भी ऐसी हैं, जिन्हें अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए पदार्थों की माँग रहती है। इन इंद्रियों में कान के लिए पोषक विषय संगीत है। ज्ञानवर्द्धन तो शिक्षण और परामर्श के आधार पर भी चल जाता है, किंतु कानों के माध्यम से अंतराल में गुदगुदी उत्पन्न करने का कार्य संगीत के माध्यम से ही बन पड़ता है। इस माध्यम से मिलने वाली दिव्य अनुभूति को नाद ब्रह्म के नाम से संबोधित किया जाता है। संगीत के अभाव में अंतरंग नीरस रहने लगता है। भाव-संवेदनाएँ प्रदान करने में यदि कर्ण-कुहरों को संगीत तरंगों की उपलब्धि न हो तो भीतर-ही-भीतर कुछ ऐसी शुष्कता उत्पन्न होने लगती है जिसे कायिक दुर्बलता एवं रुग्णता उत्पन्न करते देखा जा सके। यही कारण है कि जीवनचर्या में कहीं-न-कहीं संगीत का स्थान रखने और व्यवस्था करने को महत्त्व दिया जाता है। भजन में स्तवन और कीर्तन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसे आत्मोपचार के लिए संगीत तरंगों का उपचार ही कहा जा सकता है।

नेत्रों और नाक को अभीष्ट रस प्रदान करने के लिए प्रकृति ने हरीतिमा उगाई है साथ ही उसे पुष्पों से भी लादा है। पुष्पमात्र शोभा-सज्जा ही नहीं हैं, वरन उनमें ऐसी विशेषताएँ भी भरी पड़ी हैं, जो न केवल दर्शनीय सुषमा का रसास्वादन कराती हैं, न केवल नासिका को मनभावन सुगंध प्रदान करती हैं, अपितु चेतना में ऐसा उल्लास भी भरती हैं जिससे प्रसन्नता, नीरोगिता एवं प्रेरणाप्रद उमंगों का लाभ भी मिल सके। इन उमंगों के सहारे मनुष्य की भाव कल्पना जगती है और उन प्रसुप्त केंद्रों में उभार आता है, जो समझदारी और सूझ-बूझ से संबंधित हैं।

जहाँ फूल खिले होते हैं, वहाँ दृष्टि अनायास ही खिंचती चली जाती है। ठहरने और देखने को मन करता है। पैर ठिठक जाते हैं और जी करता है कि इस शोभा-सुषमा को देखते ही रहा जाए। वसंत ऋतु में सरसों फूलती है तो लगता है धरती ने पीली चुनरी ओढ़ ली। छोटे पौधे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जहाँ-तहाँ उगे होते हैं, उन पर भी उन दिनों फूल खिलते हैं। वे अपनी जगह जमे रहते हैं। कोई उन्हें तोड़ता नहीं, वे किसी से कुछ माँगते नहीं, फिर भी उनकी उपस्थिति भर से दर्शकों का मन फूलों की तरह ही प्रफुल्लित हो उठता है। उनका सृजन ही भगवान ने इस निमित्त किया है, कि वे स्वयं खिलें और दूसरों को खिलाएँ।

दर्शनीय स्थानों में किले, मकबरे, घाट, मंदिर, फल, बाँध ही सब कुछ नहीं है, पुष्पोद्यान भी दर्शनीय स्थानों में आते हैं और प्रकृति-प्रेमी बड़े चावपूर्वक वहाँ पहुँचते हैं। उत्तराखंड में हेमकुंड के समीप फूलों की घाटी को इसलिए ख्याति मिली कि उस क्षेत्र पर अँगरेजों की नजर गई। वहाँ की खोज-बीन हुई, उस क्षेत्र से संग्रह करके विचित्र पुष्पों के बीज इंग्लैंड भेजे गए और उनकी बहुत चर्चा योरोप में हुई। ऐसी-ऐसी अनेक फूलों की घाटियाँ हिमालय के उत्तराखंड में हैं। देश के, विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे पुष्पोद्यान हैं, जिनमें सामान्य और असामान्य स्तर की अनेकानेक जातियाँ पाई जाती हैं। प्रकृति-प्रेमियों के लिए यही तीर्थ है। भगवान की बनाई यह कलाकृतियाँ ऐसी हैं जिन्हें देखकर हर किसी का मन लुभाता है।

महाभारत में वर्णन आता है कि पांडव जब द्रौपदी से किसी इच्छित उपहार की माँग करने को कहने लगे तो उसने कोई बहुमूल्य आभूषण नहीं, वरन हिमालय पर पाए जाने वाले ब्रह्म कमल पुष्प की माँग की। भीम बहुत खोज के उपरांत उसे ले भी आए। इससे प्रतीत होता है कि कलाप्रेमियों में पुष्पों के प्रति कितना मान और आकर्षण रहा है। पुष्प जितने नयनाभिराम होते हैं, उतने ही मादक गंध की विशेषता से भी भरे-पूरे रहते हैं।

विज्ञान के आरंभिक दिनों में जलयान, वायुयान, रेल, मोटर आदि सवारियों पर चढ़ने और सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन आदि देखने का शौक उमड़ा था। वह नशा अब ठंढा हो चला है और कलाप्रेमी, लोक-मानस फिर पुरातनकाल जैसी प्रकृति शोभा का रसास्वादन करने के लिए मुड़ा है। अब पुष्पोद्यान लगाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। लोग घर, आँगन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में, पुष्प लगाना चाहते हैं। पार्कों को उनकी शोभा से सँजोया जा रहा है। महलों, कोठियों से लेकर गरीबों के झोंपड़ों तक बेलों और पुष्पों की हरीतिमा को शोभा-सज्जा का प्रधान माध्यम बनाया जा रहा है। जहाँ पक्की जगह है, वहाँ गमलों की व्यवस्था की जा रही है। ऐसे पौधे तलाशे जा रहे है, जो बंद कमरों में भी हरे-भरे रह सकें। उत्सवों में फूलों का बाहुल्य रहता है। विवाहों में अब वधुओं के आभूषण सोने-चाँदी के पहनने-पहनाने का रिवाज घट रहा है और उनके स्थानों पर फूलों के आभूषण बनाए और पहनाए जा रहे हैं। यह सुरुचि की बढ़ोत्तरी का चिह्न है। इसे प्रकृति का सम्मान और प्रेम ही कहा तथा सराहा जाएगा।

शारीरिक, नई मानसिक चिकित्सा की दृष्टि से फूलों ने अपना अनोखा स्थान बनाया है। जिस प्रकार पिछले दिनों जड़ी-बूटियों के सेवन से रोग निवारण का प्रयोग चलता था, अब ठीक उसी प्रकार फूलों के रंग, गंध तथा रासायनिक प्रभाव का उपयोग करके स्वास्थ्य-संवर्द्धन एवं रोग निवारण की बात सोची जा रही है। इस दिशा में उत्साहवर्द्धक प्रगति भी हुई है।

गंध की क्षमता दृश्य प्रभाव से कम महत्त्व की नहीं। कीड़े-मकोड़े और छोटे जीव-जंतुओं की अन्य इंद्रियाँ विकसित नहीं होती, वे मात्र गंध के सहारे ही अपना आहार खोजते, रास्ता तलाश करते, शत्रु से बचते और प्रणय-निवेदन करते हैं। उनकी दुनिया गंधमय है। हिंस्र पशुओं को शिकार ढूँढ़ने में बहुत कुछ सहायता गंध से ही मिलती है। जासूसी कुत्ते इसी आधार पर अपराधियों को तलाश करने में सफल होते हैं।

गंध का मनुष्य के लिए भी बहुत महत्त्व है, पर उसे व्यवहार में सुरुचि या कुरुचि का ही माध्यम माना जाता है। दुर्गंध पर नाक-भौंह सिकोड़ी जाती है, उससे बीमारी का खतरा अनुभव किया जाता है। सुगंध को सुरुचि का प्रतीक माना जाता है और विलास-शृंगार के लिए उसे काम में लाया जाता है। देवता को प्रसन्न करने में भी चंदन, केसर, अगरबत्ती, हवन-सामग्री आदि का प्रयोग होता है। अमीरों के यहाँ इत्रों की महक उठती रहती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब इससे अगला प्रयोग स्वास्थ्य-संवर्द्धन और रोग-निवारण के लिए किया जाने लगा है। कुछ समय पूर्व संगीत द्वारा स्नायुसंस्थान को उत्तेजित करके रोग-निवारण के प्रयोग चले थे। अब इसी शृंखला में गंध-उपचार की एक नई कड़ी और जुड़ने जा रही है। इस आविष्कार को पुष्प-चिकित्सा नाम दिया गया है।

पुष्पों के रंगों और आकृतियाँ की विशेषता मनमोहक मानी जाती रही है। इसलिए लोग पुष्प वाटिकाएँ लगाते हैं। मेजों पर गुलदस्ते सजाते हैं। मालाएँ पहनते और पहनाते हैं। महिलाओं के जूड़ों में और पुरुषों के कोटों में पुष्प लगे देखे जाते हैं। देव-आराधना में, हर्षोत्सवों में, स्वागत सत्कारों में, सज्जा-प्रयोजनों में तो उनकी प्रधानता रहती ही है। अब यह पाया गया है कि पुष्पों की चित्र-विचित्र गंध विभिन्न रोगों के उपचार में भी काम आ सकती है। उनमें मनमोहक गुण तो हैं ही, स्वास्थ्य-संवर्द्धन और रोग निवारण की विशेषता भी उत्साहवर्द्धक मात्रा में विद्यमान है।

सोवियत संघ के वाकू नगर में इसी प्रयोजन के लिए एक अस्पताल खोला गया है। उसमें मात्र रोगों के अनुसार अमुक गंध वाले पुष्पों के सूँघने की व्यवस्था है। रोगी को उन पुष्पों के गमलों के बीच बिठा दिया जाता है। उसे साँस लेकर सुगंध को खींचने और शरीर में भरने के लिए कहा जाता है। रोगी वैसा ही करता है। किसे कितनी देर तक, किस समय, किस पुष्प की गंध सूँघनी चाहिए; यह उसके रोग-निदान और निर्धारण के आधार पर किया जाता है। भिन्न-भिन्न पुष्पों में भिन्न-भिन्न रोगों के निवारण की क्षमता खोजी गई है। तदनुसार यह चिकित्सापद्धति विकसित की गई है।

जो रोगी चल-फिर नहीं सकते उनके पलंग के इर्द-गिर्द गमले सजा दिए जाते हैं और सिरहाने इस प्रकार के पुष्प पर्याप्त मात्रा में बिछाये जाते हैं कि रोगी को सरलतापूर्वक उनकी गंध मिलती रहे। अब तक ऐसे पंद्रह प्रकार के पुष्प-पौधे चुने गए हैं। जिनमें बलवर्द्धक एवं विषाणुनाशक गुण बड़ी मात्रा में हैं। अन्य तो सभी शोभा एवं प्रसन्नता की पूर्ति कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकने वाले ही समझे जा रहे हैं। ठंढक के दिनों रोगियों के कमरे गरम हवा से युक्त रखे जाते हैं, ताकि गंध को उड़कर नासिका तक पहुँचने में अड़चन न पड़े। समय-समय पर हलके या तेज गति से हवा फेंकने वाले पंखों का भी उपयोग किया जाता है, जिससे रोगी के बिना अतिरिक्त प्रयास किए ही अपने स्थान पर बैठे या लेटे रहने पर भी पुष्पों की गंध का सान्निध्य प्राप्त होता रहे।

न केवल रोग निवारण हेतु अपितु मानव समुदाय का रुझान सुरुचिपूर्ण बनाने तथा नैसर्गिक सौंदर्य के माध्यम से प्रसन्नता भरा वातावरण लाने के लिए यह अनिवार्य है कि घर-घर, गाँव-गाँव पुष्प-वाटिका, शाक-वाटिका का आंदोलन चल पड़े। इनके बहुमुखी लाभ बताते हैं कि इनमें किसी प्रकार के घाटे का सौदा नहीं, नफा-ही-नफा है। हमें आर्थिक ही नहीं, अंतः के परिशोधन पक्ष पर भी ध्यान देना है। प्रकृति की ओर उन्मुख होकर मनुष्य उस शाश्वत सौंदर्य-रस का रसास्वादन करता है, जो सदा-सदा से उसे प्रेरणा देता चला आया है।

भारतीय वैदिक वैज्ञानिक संस्कृति में शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, वैश्विक, धार्मिक आदि तथ्यों जैसे अनेक लाभदायक तथ्यों को देखते हुए हरीतिमा संवर्द्धन को जीवनदायिनी समझते हुए इसका निरंतर अभिवर्द्धन का सुझाव दिया गया है। शास्त्रों में शतपुत्रों के समान एक वृक्षारोपण का महत्त्व दिया गया है। देववृक्षों में पीपल, बरगद, नीम, आँवला, गूलर, शिवलिंगी, विल्व, तुलसी, रुद्राक्ष जैसे अनेक वृक्षों का पूजनीय स्थान है। इन्हें देव-अमृत तुल्य माना जाता है।

इन दिनों बढ़ती हुई जनसंख्या एवं यांत्रिक गतिविधियों से वायु प्रदूषण का अनुपात असाधारण रूप से बढ़ा है। कारखानों तथा द्रुतगामी वाहनों में जो कोयला, तेल जलता है, उसका विषैला धुआँ इस वायुमंडल में निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह वायु प्राणिमात्र के लिए अन्न, जल से भी अधिक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार जल या पानी के सहारे जीवित रहते हैं, उसी तरह हम सब हवा के समुद्र से प्राण-संपदा प्राप्त करते हैं। जल विषाक्त होने पर मछलियों का दम घुट जाता है। वायु में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घुलता और बढ़ता प्रदूषण पशु-पक्षियों समेत मनुष्यों को भी घुटन का अभिशाप सहन करने के लिए विवश करेगा।

वायु प्रदूषण के साथ विषैली साँस से आरोग्य नष्ट होने, रुग्णता का दौर उभरने, महामारियाँ फैलने के अतिरिक्त एक संकट तापमान बढ़ने का भी है। संतुलित तापमान से मौसम का नियंत्रित क्रम यथावत् बना रहता है, किंतु यदि गरमी की मात्रा बढ़े तो उसकी भयानक प्रतिक्रिया मौसम गड़बड़ाने के रूप में प्रकट होती है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष पड़ते हैं। जमी बरफ पिघलती है और समुद्र की सतह ऊँची उठने लगती हैं। फलतः अग्नियुग, हिमयुग जैसे प्रकृति प्रकोप उभरते हैं, जिनके कारण भूमि परिभ्रमण प्रक्रिया लड़खड़ाती है। भूकंप आते हैं और थल की जगह जल और जल की जगह थल आ धमकने जैसे व्यतिक्रम खड़े होते हैं। भूतकाल में जब भी ऐसे प्रकृति विपर्यय उभरे हैं, प्रलय जैसी स्थिति बनी है। इन दिनों बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण उन भूतकालीन विभीषिकाओं का नया दौर आने की आशंका है।

युद्धोन्माद में प्रयुक्त होने वाली बारूद विषाक्त सामान्य धुएँ की तुलना में हजारों गुणा अधिक भयंकर होती है, फिर पिछले दिनों अणु विस्फोटों का नया सिलसिला चला है। जापान में फेंके गए दो छोटे-छोटे एटम बमों ने उन दिनों तत्काल कितनी हानि पहुँचाई तथा बाद में उस विकिरण से प्रभावित कितने व्यक्ति अपंग, असमर्थ हो गए, विकलांग बच्चे उत्पन्न हुए इसका लेखा-जोखा ध्यानपूर्वक पढ़ने से कलेजा दहलने लगता है। जापान पर गिराए गए बमों की तुलना में हजारों गुना विकिरण उन परीक्षण विस्फोटों के कारण उत्पन्न हुआ है, जो जल, थल और आकाश में अनेक देशों द्वारा निरंतर किए जाते रहे हैं।

विज्ञजनों ने पर्यवेक्षण करके बताया है कि अब तक हो चुके अणु विस्फोटों के कारण उत्पन्न हुई विकृतियाँ ही ऐसी हैं, जो सैकड़ों वर्षों तक कष्टकारक रहेंगी और पीढ़ियों तक त्रास देंगी। यदि यह सिलसिला आगे भी जारी रहा तो उसका प्रभाव एक प्रकार से महाप्रलय जैसा सर्वनाशी होगा। वायुमंडल की विकृतियाँ धरती और जल पर उतरती हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उनमें भी ऐसे तत्त्व फैलते हैं जो अन्न, जल को भी साँस की तरह विषाक्त करके जीवन संकट उत्पन्न करें।

बिगाड़ने वाले जब इतनी निर्भीकतापूर्वक विनाश पर उतारू हैं, तो देवत्व के पक्षधर लोगों के लिए यह उचित नहीं कि हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे रहें। यदि बिगाड़ने वाले हाथों को रोक सकने की सामर्थ्य न हो, तो कम-से-कम सफाई की व्यवस्था तो करनी ही चाहिए। यह सरलतम और सफलतम उपचार है। इतना तो नगरपालिकाओं के सफाईकर्मी तक करते रहते हैं। हम उतना भी कुछ न करें और दूसरों के साथ जुड़े हुए अपने भाग्य-भविष्य को, पीढ़ियों के निर्वाह को अंधकारमय बनाने में रोक-थाम न कर सकें। यों होना यह भी चाहिए कि महाविनाश पर उतारू लोगों पर जनमत का दबाव डालें और इस सृष्टि का सर्वनाश करने वाले आततायियों और आतंकवादियों को मनमानी न करने दें। जाग्रत लोकमत दोनों ही काम कर सकता है। रोक-थाम तत्काल बन पड़ती न देखें तो भी परिशोधन प्रयोगों को हाथ में लेने का उत्साह तो प्रकट करें ही।

इस संदर्भ में सरलतम उपाय-उपचार दो हैं—एक अग्निहोत्र प्रक्रिया, दूसरा हरीतिमा संवर्द्धन। अग्निहोत्र के संबंध में मतभेद और विवाद भी हो सकते हैं, किंतु हरीतिमा संवर्द्धन में तो आस्तिक-नास्तिक का, धर्म-संप्रदाय का, विज्ञान-बुद्धिवाद का भी विरोध-अवरोध नहीं है, उसे तो सर्वसम्मत उपचार की तरह सर्वत्र सरलतापूर्वक अपनाया जा सकता है।

वृक्ष, वनस्पतियों का यह गुण सर्वविदित है कि वे वायु में से अनुपयुक्त तत्त्वों को सोखते और प्राणवायु को निस्सृत करते रहते हैं। आरोग्य संपादन के उपायों में एक यह भी है कि हरे-भरे क्षेत्र उद्यान में रहकर प्राणप्रद वायु सेवन की व्यवस्था बनाई जाए। प्रगतिशील देशों में शोभा और स्वास्थ्य का समन्वित लाभ लेने के लिए घरों के साथ हरीतिमा भी जोड़कर रखी जाती है। कई तो उस बागवानी को घरेलू विनोद मनोरंजन की तरह परिवार के सदस्यों द्वारा ही संपन्न करते हैं। माली का उपयोग तो मात्र मार्गदर्शन और सहयोग भर के लिए लेते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह एक सृजनात्मक पद्धति है। शिशुपालन, पशुपालन की तरह हरीतिमा-संवर्द्धन के माध्यम से भी निर्माण और संवर्द्धन की सत्प्रवृत्ति उगती, बढ़ती और परिष्कृत होती है। स्वभाव, अभ्यास में इस प्रकार का समावेश होना बड़ी बात है। देखने में यह छोटी बात दिखते हुए भी वस्तुत: बड़ी बात है। मनुष्यों में जो महामानव बने हैं। उनमें सृजनात्मक प्रवृत्तियाँ ही विशेष रूप से विकसित हुई हैं। हरीतिमा-संवर्द्धन के प्रचार का यह अतिमहत्त्वपूर्ण दूरगामी लाभ है। वनस्पतियों के सान्निध्य में प्राणवायु की प्रचुर मात्रा में उपलब्धि देखने में भले ही सामान्य हो वस्तुत: वह है असामान्य।

चर्चा इन दिनों वायुमंडल में बढ़ती विषाक्तता और उस कारण प्राणियों तथा वनस्पतियों के लिए उत्पन्न संकट की हो रही है। उसके लिए हरीतिमा-संवर्द्धन द्वारा रोक-थाम करने के उपाय-उपचार पर विचार किया जा रहा था। इस संबंध में मोटेतौर पर यह कहा जा सकता है कि वृक्षारोपण एवं वनस्पति-संवर्द्धन को उत्साह भरे आंदोलन का रूप दिया जाए और उसमें जन-जन को किसी-न-किसी प्रकार सम्मिलित किया जाए।

जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ ईंधन और इमारती कामों के लिए लकड़ी की आवश्यकता बढ़ रही है। पेड़ कट रहे हैं, पर नए लगते नहीं। ऐसी दशा में मौसम का संतुलन बिगड़ता है। अनावृष्टि से दुर्भिक्ष का माहौल बनता है। भूमिक्षरण और रेगिस्तान बढ़ने का संकट खड़ा होता है।

जिनके पास अपनी जमीन है, वे उसका एक भाग वृक्ष उगाने, पुष्प खिलाने और शाक उत्पन्न करने के लिए सुरक्षित रखें। मात्र अन्न और नकदी देने वाली फसलें ही पर्याप्त नहीं होंगी। जिनके पास अपनी जमीन न हो, वे सरकारी या दूसरों की जमीन में मालिकों का स्वामित्व स्वीकार करते हुए उन्हीं के लिए अपने परिश्रम से पेड़ लगाएँ, सींचें। पूर्वजों की तथा अपनी स्मृति में किए जाने वाले पुण्य-परमार्थ में वृक्ष लगाना या पैसा देकर दूसरों से लगवाने का कार्य बहुत ही श्रेष्ठ और सत्परिणाम उत्पन्न करने वाला है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घरों में शाकवाटिका लगाने का आंदोलन इसी अभियान का एक अंग है। वनस्पति से भी छोटे रूप में वृक्षों जैसे लाभ मिलते हैं। जिनके पास भूमि नहीं है, वो भी आँगनवाड़ी, छप्परवाड़ी, छतवाड़ी के रूप में शाक उगा सकते हैं। साथ ही उससे मुफ्त में ताजे शाक मिलने जैसे आर्थिक लाभ उठाते रह सकते हैं। इन दिनों हरे, पौष्टिक आहार के न मिलने से कुपोषणजन्य अनेकानेक रोग बढ़ते जा रहे हैं। इनका निराकरण घी-मलाई से, टानिकों से नहीं, वरन शाक, फल, अंकुरित अन्न जैसे जीवित आहार से भी संभव हो सकता है। घरेलू शाक-वाटिका के माध्यम से गरीब लोग भी यह सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। बड़े परिवारों के लिए छोटे घर में भी हरी चटनी की दैनिक व्यवस्था बनाए रहने के लिए पोदीना, धनिया, अदरक, मिर्च, पालक, अनार आदि लगाने से काम चल सकता है। खिलते हुए पुष्प हँसते हुए बालकों की तरह होते हैं। उनकी छटा तथा महक उदास, निराशों में भी उत्साह उभारती है। सज्जा, पूजा में उनका उपयोग असंदिग्ध ही है। तुलसी आरोपण को हरीतिमा संवर्द्धन के प्रयासों का मुकुटमणि कहा जा सकता है। तुलसी में वायु प्रदूषण का परिशोधन करने की अद्‌भुत क्षमता है। उसके संपर्क से बहने वाली हवा में आरोग्यवर्द्धक अनेक विशेषताएँ भरी रहती हैं। यहाँ तक कि यह मक्खी, मच्छर, खटमल, पिस्सू ही नहीं साँप, बिच्छू तक को दूर करती है। औषधियों में तुलसी को अनुपम एवं मूर्द्धन्य माना गया है। इस अकेली में प्रायः सभी छोटे-बड़े रोगों का उपचार करने की क्षमता है। तुलसी, काली मिर्च, गंगाजल के योग से गायत्री मंत्र जपते हुए छोटी गोलियाँ बनाकर रख लेने और उन्हें अनुपान भेद विभिन्न रोगों में घरेलू चिकित्सा की तरह काम में लाया जा सकता है।

वृक्ष-वनस्पतियों के उगाने, पोषने, बढ़ाने की कला को अधिकाधिक विकसित किया जाना चाहिए। इसके द्वारा संबद्ध लोगों में सृजनात्मक कुशलता बढ़ती है। कलाकारिता, सौंदर्य, बुद्धि, सुरुचि निखरती है। शिशुपालन जैसा आनंद आता है। पौधों की मैत्री से हाथोहाथ सुगंधित-सुरभित प्राणवायु के रूप में जीवनीशक्ति का उपहार मिलता है। घरों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उगाई शाक-भाजी और बाजार से खरीदी हुई में उतना ही अंतर है, जितना घर के दूध एवं आहार में। बाजार से उन्हें उतनी शुद्ध एवं जीवंत स्थिति में खरीदा ही नहीं जा सकता। पैसे की बचत, शारीरिक, मानसिक व्यायाम, पोषण, आहार जैसे सामान्य एवं महत्त्वपूर्ण लाभों की भी एक शृंखला इस प्रक्रिया के साथ जुड़ती है। तुलसी आरोपण में औषधियों के लिए प्रयुक्त होने वाली जड़ी-बूटियों को उगाने-बढ़ाने का भी एक अभिनव शुभारंभ संकेत हैं। गांधी जी ने नमक सत्याग्रह जैसे छोटे से कार्यक्रम को लेकर सत्याग्रह आंदोलन का श्रीगणेश किया था। कालांतर में वही चिनगारी बढ़कर दावानल के रूप में विकसित हुई और करो या मरो का विप्लव खड़ा करते हुए अँगरेजी शासन को उखाड़ फेंकने में समर्थ हुई।

हरीतिमा-संवर्द्धन की योजना उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जितनी कि मनुष्यों के निर्वाह की घरेलू शाकवाटिका। इसे तुलसी आरोपण के शुभारंभ के रूप में इसलिए चलाया गया कि उसे सुगम उपचार के रूप में सर्वसाधारण द्वारा अपनाया जा सके। वस्तुतः यह हरीतिमा का महत्त्व समझाने और वृक्ष-वनस्पतियों, अन्न-शाकों, जड़ी-बूटियों के उत्पादन का ऐसा आंदोलन है, जिसे अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण माना और उसे जीवन चर्या में प्रमुख स्थान मिलने की स्थिति तक पहुँचाना चाहिए। धरती को हरा-भरा रहना चाहिए और उस प्रकृति अनुदान का भरपूर लाभ समूची मनुष्य जाति को, प्राणिसमुदाय को मिलना चाहिए।

इन दिनों बढ़ते प्रदूषण से बचने के लिए कारगर उपचार के इस संदर्भ में वनस्पति-संवर्द्धन का उपचार यदि काम में लाना हो, तो इसके लिए तुलसी आरोपण को प्रमुखता देनी होगी। उसके पौधे हर आँगन में लगाए जाने चाहिए और इस आधार पर आस्तिकता, धर्मधारणा के संवर्द्धन का भी दोहरा लाभ उठाया जाना चाहिए। धातु या पत्थर से ही प्रतिमा नहीं बनती, वरन अक्षय वट, बोधिवृक्ष, देव, अश्वत्थ की तरह पेड़ों और पौधों को भी भगवान की प्रतिमा मानकर उनको श्रद्धा संवर्द्धन का निमित्त कारण बनाया जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुलसी का बिरवा आँगन में एक सुसज्जित थाँवले के रूप में लगाया जाए और उसे खुले आकाश में सूर्य भगवान की, खुले पवन की, वरुण की, बादल की छत्रछाया में पलने वाला देवता माना जाए। वनस्पति मंदिर सच्चे अर्थों में एक पुनीत देवता हैं। धातु या पाषाण की प्रतिमा की तुलना में तुलसी का महत्त्व किसी प्रकार कम नहीं है। इस स्थापना का अर्थ है, घर में भगवान के मंदिर का निर्माण कर लेना। इसमें कोई पूजा भी नहीं करनी पड़ती है। मात्र श्रमदान से ही सारा काम चल जाता है। थाँवले को जल्दी-जल्दी पोतते-रँगते रहा जाए तो उसका सुहावना रूप श्रद्धा-संवर्द्धन की भूमिका भी संपन्न करता रहेगा।

प्रातः-सायं जब भी अवकाश हो सूर्यार्घ, अगरबत्ती, मानसिक गायत्री जप, सविता का ध्यान, नमन-वंदन, परिक्रमा जैसे उपचार से इस वनस्पति मंदिर की पूजा-आरती सरलतापूर्वक की जा सकती है। घर का कोई भी सदस्य इसे करता रह सकता है। इस पूजा-उपचार में घर के सभी श्रद्धालु लोग किसी-न-किसी रूप में भागीदार बन सकते हैं। नमन-वंदन तो निकलते-बरतते भी हो सकता है। इस आधार पर घर-परिवार में आस्तिकता, धार्मिकता का वातावरण बनता है। इस छोटी व्यवस्था में घर-परिवार में पनपने वाली श्रद्धा अंततः दूरगामी सत्परिणाम उत्पन्न करती है।

इन दिनों वायु प्रदूषण की तरह ही चेतनात्मक वातावरण भी कम विषाक्त नहीं हो रहा है। वातावरण के परिशोधन में जिस धर्मश्रद्धा का पुनर्जीवन आवश्यक है। उसकी पूर्ति तुलसी देवालय के माध्यम बन पड़ती है। इस प्रकार तुलसी आरोपण में न केवल वायुमंडल के संशोधन की, वरन आस्था संकट से घिरे हुए वातावरण में श्रद्धा-संवर्द्धन की आवश्यकता भी बहुत हद तक पूरी होती है। एक प्रकार से दोहरा लाभ प्रदान करने वाले हरीतिमा संवर्द्धन अभियान का शुभारंभ तुलसी आरोपण के साथ करने की बात सोचनी चाहिए। इसके लिए बीज इकट्ठे करने, पौध उगाने, लगाने का प्रचार करने के लिए हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए। उत्साह उभारा जाए और तत्काल सहायता देने के लिए प्रयत्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किया जा सके, तो प्रज्ञा परिवार संकट की इस महती आवश्यकता को पूरी करने में भली प्रकार सफल हो सकता है।

तुलसी को प्रतीक मानकर हरीतिमा-संवर्द्धन के कार्य का श्रीगणेश एक व्यापक और विस्तृत प्रक्रिया है। वनस्पति हमारे लिए जीवन-प्राण है। वह धरती से आहार, बादलों से जल, आकाश से प्राणवायु खींचकर जीवन-संपदा के रूप में प्रदान करती है। इसलिए उसे पशुपालन, गोपालन की तरह ही महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए। तुलसी के साथ दिव्य औषधि की विशेषताएँ तथा अध्यात्मपरायण श्रद्धा भावनाएँ भी जुड़ती हैं और इसके लाभ तीन से बढ़कर पाँच हो जाते हैं। श्रद्धा आरोपण के लिए देव-प्रतिमाओं की पूजा-परंपरा प्रचलित है। प्रतिमाओं को धातु पाषाण की अपेक्षा वनस्पति के तुलसी के रूप में पूजा जाना उपयोगिता के साथ भी जुड़ता है। उसमें कृतज्ञता की एक नई भाव गरिमा का समावेश होने से लाभ का अनुपात दोहरा बनता है।

इस प्रकार लता-गुल्म, वनस्पति और वृक्षादि जैसे हरीतिमा संवर्द्धक तथा जड़ी-बूटियों के पौधों से शारीरिक, मानसिक, आर्थिक तथा वायु-प्रदूषण से संबंधित अनेकानेक लाभ-ही-लाभ हैं। इसी कारण हरीतिमा—जीवन और जगतरक्षक मानी जाती रही है। इसे जीवंत देवताओं की श्रेणी में रखा गया है।

❐❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ० प्र०)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिशन की पत्रिकाएँ

(१) **अखण्ड ज्योति** (मासिक)

(धर्म एवं अध्यात्म के तत्त्वज्ञान का विज्ञान एवं तर्क-तथ्य-प्रमाण की कसौटी पर खरा चिंतन)

वार्षिक शुल्क-220.00, आजीवन बीस वर्षीय शुल्क-5000.00 रुपया।

अखण्ड ज्योति अंग्रेजी (द्वि-मासिक)

वार्षिक शुल्क-140.00 रुपया

पता : अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा-281003

फोन : (0565) 2403940

(२) **युग निर्माण योजना** (मासिक)

(व्यक्ति, परिवार, समाज निर्माण एवं सात आंदोलनों की मार्गदर्शक पत्रिका)

वार्षिक शुल्क-110.00, आजीवन बीस वर्षीय शुल्क-2500.00 रुपया।

युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक)

(गायत्री महाविज्ञान, धर्म, अध्यात्म एवं युगानुकूल विचार परिवर्तन का मार्गदर्शन)

वार्षिक शुल्क-180.00, आजीवन बीस वर्षीय शुल्क-4000.00 रुपया।

पता : युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-3

फोन : (0565) 2530128, 2530399

फैक्स : (0565) 2530200

(३) **प्रज्ञा अभियान** (पाक्षिक)

(युग निर्माण मिशन के क्रियाकलापों एवं मार्गदर्शन का समाचार-पत्र)

वार्षिक शुल्क-60.00 रुपया।

पाक्षिक वीडियो पत्रिका : युग प्रवाह

(युग निर्माण मिशन के प्रमुख क्रियाकलापों की दृश्य-श्रव्य जानकारी)

वार्षिक शुल्क-500.00 रुपया।

पता : शांतिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड) फोन : 01334-260602

VM 22

7/-